भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी तीर्थ पूजा

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना –

(तर्ज-आओ बच्चों.....)

चलो चलें काकन्दी नगरी, पुष्पदन्त को नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।टेक.।।

चौबिस तीर्थंकर में से, श्रीपुष्पदन्त नवमें प्रभु हैं।
उनसे काकन्दी नगरी ने, प्राप्त किया वैभव सब है।।
इन्द्र मनुज भी आकर जिस, तीरथ को शत-शत नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।1।।

आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण, विधी हम करते हैं।
पूजन में काकन्दी नगरी, का स्थापन करते हैं।।
आत्मशक्ति प्रगटाने हेतु, तीर्थक्षेत्र का यजन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –

स्वर्ण भृंगार में क्षीर सम नीर ले।
धार डालूँ तो मिट जाय भव पीर है।।

तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस के चन्दन मलयगिरि का लाया प्रभो।
भव का संताप मैंने नशाया विभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज से नाथ पूजा करूँ।
पूर्ण आनंदमय आत्मसुख को वरूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जूही चंपा चमेली कुसुम ।
तीर्थ पद में चढ़ा कर लहूँ पद विमल।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियां लाडुओं से भरा थाल है।
रोग क्षुध नाश हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक की ज्योति जलाई प्रभो।
स्वर्ण थाली में आरति सजाई प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्निघट में जलाऊँ प्रभो।
कर्म की धूम्र चहुँदिश उड़ाऊँ प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनंनास नींबू नरंगी लिया।
मोक्षफल आश से नाथ अर्पित किया।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि युत अर्घ्य अर्पण करूँ।
''चन्दनामति'' प्रभू पद समर्पण करूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुःख रंच ना।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछन्द –

गंगानदी के नीर से त्रयधार करूँ मैं।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु शांतिधार करूँ मैं।।

शांतये शांतिधारा

नाना तरह के पुष्प अंजूली में भर लिया।
पुष्पांजली कर मैंने आत्मसौख्य वर लिया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

–अर्घ्य (शेर छन्द) –

फाल्गुन वदी नवमी जहाँ प्रभु गर्भ में आये।
काकन्दी में जयरामा माँ को स्वप्न दिखाये।।
उस गर्भकल्याणक से पूज्य भूमि को वन्दूँ।
काकन्दी को मैं अर्घ्य चढ़ा दुःख को खंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम को जन्म पुष्पदंत का।
काकन्दी में हुआ था जब त्रैलोक्य धन्य था।।
उस जन्मकल्याणक पवित्र तीर्थ को नमूँ।
कर अर्घ्य समर्पण प्रभू तीर्थेश को प्रणमूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम जहाँ वैराग्य हुआ था।
श्री पुष्पदंत जिनवर ने त्याग लिया था।।
काकन्दी का वह पुष्पक वन हो गया पावन।
उस तीर्थ को ही मेरा यह अर्घ्य समर्पण।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी दुतिया को जहाँ ज्ञान हुआ था।
जिनवर समवसरण का निर्माण हुआ था।।
काकन्दि उस पवित्र धरा को नमन करूँ।
मैं अर्घ्य चढ़ा घाति कर्म को हनन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
काकन्दि में हुए अतः वह भूमि नमूँ नित।।
सम्मेदशिखर से पुनः वे मोक्ष पधारे।
उस सिद्धभूमि को जजूँ बंधन कटें सारे।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथनिर्वाणकल्याणकेन पवित्रसम्मेदशिखरक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र –ॐ ह्रीं काकन्दीजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–गीताछन्द –

जय तीर्थ काकन्दी जगत में, जन्मभूमि जिनेन्द्र की।
जय चार कल्याणक धरा वह, पुष्पदन्त जिनेन्द्र की।।
जय मात जयरामा व पितु, सुग्रीव का शासन जहाँ।
जयवंत हो त्रैलोक्यपूज्य, जिनेन्द्र का शासन जहाँ।।1।।

शुभ स्वर्ग प्राणत का सुखी, जीवन व्यतीत किया प्रभो।
प्रकृती जो तीर्थंकर बंधी थी, उसकी थी महिमा प्रभो।।
माँ के गरभ में आने से, छह माह पहले से हुई।
काकन्दि नगरी में धनद, द्वारा रतन वर्षा हुई।।2।।

रोमांच होता है हृदय में, जन्म का क्षण सोचकर।
जब स्वर्ग पूरा आ गया था, इस धरा पर भक्तिवश।।
सौधर्म सुरपति की शची, इन्द्राणी का सौभाग्य था।
जिसने प्रसूतिगृह में जा, पहले किया प्रभुदर्श था।।3।।

मायामयी बालक को रख, माँ को किया निद्रामगन।
गोदी में लाकर जिनशिशू को, कर लिया जीवन सफल।।
फिर इन्द्र ने जिनराज दर्शन, हेतु नेत्र सहस किया।।
मेरू शिखर पर जा प्रभू के, जन्म का उत्सव किया।।4।।

भारत की ही धरती का यह, इतिहास पौराणिक रहा।
त्रेसठ शलाका पुरुषों का, जिसने कथानक है कहा।।
जहाँ विश्वमैत्री का सदा, संदेश देते ऋषि मुनी।
उस देश में ही जिनवरों के, जन्म की महिमा सुनी।।5।।

तीर्थंकरों की श्रेणि में, श्रीपुष्पदंत नवम कहे।
उनके जनम से धन्य, काकन्दीपुरी के नृप रहे।।
बीते करोड़ों वर्ष फिर भी, वह धरा तो पूज्य है।
पूजी सदा जाती रहेगी, उस धरा की धूल है।।6।।

जहाँ देख उल्कापात प्रभु, वैरागि बनकर चल दिये।
साम्राज्य और कुटुम्ब को, समझा क्षणिक सब तज दिये।।
दीक्षा लिया तप कर जहाँ, कैवल्यज्ञान प्रगट किया।
उस पुण्यथान जिनेन्द्र भूमी, का सदा अर्चन किया।।7।।

जयमाल में पूर्णार्घ्य का, यह थाल अर्पित कर दिया।
गुणमाल में निज आत्म का, उद्गार प्रगटित कर दिया।।
स्वीकार कर लो द्रव्य मेरा, तीर्थ अर्चन कर रहा।
भंडार भर दो ''चन्दनामति'', आत्मचिंतन चल रहा।।8।।

–दोहा –

पुष्पदन्त जन्मस्थली, काकन्दी शुभ तीर्थ।
अर्घ्य समर्पण कर प्रभो, पाऊँ आतम तीर्थ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्य प्राणी पुष्पदन्त की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थेश प्रभु की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
वे ''चन्दनामति'' एक दिन खुद तीर्थ सम बन जाएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।।

भगवान श्री पुष्पदंतनाथ पूजा

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्र त्रिभुवन अग्र पर तिष्ठें सदा।
तीर्थेश नवमें सिद्ध हैं शतइन्द्र पूजें सर्वदा।।
चउज्ञानधारी गणपती प्रभु आपके गुण गावते।
आह्वान कर पूजें यहाँ प्रभु भक्ति से शिर नावते।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद) –

सरयू नदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्य सुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल अक्षत से, प्रभु ढिग पुंज चढ़ाऊँ।
निज गुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरे मनोरथ खाली।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे सब, ज्ञान भारती प्रगटे।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीर्घ नशाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला चंदन कर्पूरादिक, मिश्रित धूप सुगंधी।
जिन सन्मुख अग्नी में खेऊँ, धूम उड़े दिश अंधी।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आडू लीची सेव संतरा आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू शत शत शीश झुकाऊँ।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
केवल ज्ञानमती हेतू मैं, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ जिनगुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

प्राणत स्वर्ग विहाय, काकंदीपुर आये।
इंद्र सभी हर्षाय, गर्भकल्याण मनाये।।
पिता कहे सुग्रीव, जयरामा जगमाता।
नवमी फागुन कृष्ण, जजत मिले सुखसाता।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां श्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर एकम शुक्ल, जन्म लिया तीर्थंकर।
रुचकवासिनी देवि, जातकर्म में तत्पर।।
शची प्रभू को गोद, ले स्त्रीलिंग छेदा।
जन्म महोत्सव देव, करके भव दुख भेदा।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्का गिरते देख, प्रभु विरक्त अपराण्हे।
मगसिर शुक्ला एक, तप लक्ष्मी को वरने।।

पालकि रविप्रभ बैठ, पुष्पकवन में पहुँचे।
जजूँ आज शिर टेक, तपकल्याणक हित मैं।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला दूज, सायं पुष्पक वन में।
घाति कर्म से छूट, नागवृक्ष के तल में।।
केवल रवि प्रगटाय, समवसरण में तिष्ठे।
स्वात्म निधी मिल जाय, इसीलिए हम पूजें।।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां श्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला आठ, सायं सहस मुनी ले।
सकल कर्म को काट, गिरि सम्मेद शिखर से।।
पुष्पदंत भगवंत, सिद्धिरमा के स्वामी।
जजत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां श्रीपुष्पदंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

त्रिभुवन तिलक महान्, पुष्पदंत तीर्थेश हैं।
नित्य करूँ गुणगान, पाऊँ भेद विज्ञान मैं।।1।।

–रोला छंद –

अहो! जिनेश्वर देव! सोलह भावन भाया।
प्रकृती अतिशय पुण्य, तीर्थंकर उपजाया।।
पंचकल्याणक ईश, हो असंख्य जन तारे।
त्रिभुवन पति नत शीश, कर्म कलंक निवारें।।2।।

नाममंत्र भी आप, सर्वमनोरथ पूरे।
जो नित करते जाप, सर्व विघ्न को चूरें।।
तुम वंदत तत्काल, रोग समूल हरें हैं।
पूजन करके भव्य, शोक निमूल करे हैं।।3।।

इन्द्रिय बल उच्छ्वास, आयू प्राण कहाते।
ये पुद्गल परसंग, इनको जीव धराते।।
ये व्यवहारिक प्राण, इन बिन मरण कहावे।
सब संसारी जीव, इनसे जन्म धरावें।।4।।

निश्चयनय से एक, प्राण चेतना जाना।
इनका मरण न होय, यह निश्चय मन ठाना।।
यही प्राण मुझ पास, शाश्वत काल रहेगा।
शुद्ध चेतना प्राण, सर्व शरीर दहेगा।।5।।

कब ऐसी गति होय, पुद्गल प्राण नशाऊँ।
ज्ञानदर्शमय शुद्ध, प्राण चेतना पाऊँ।।
ज्ञान चेतना पूर्ण, कर तन्मय हो जाऊँ।
दश प्राणों को नाश, ज्ञानमती बन जाऊँ।।6।।

गुण अनंत भगवंत, तब हों प्रगट हमारे।
जब हो तनु का अंत, यह जिनवचन उचारें।।
समवसरण में आप, दिव्यध्वनी से जन को।
करते हैं निष्पाप, नमूँ नमूँ नित तुम को।।7।।

श्रीविदर्भमुनि आदि, अट्ठासी गणधर थे।
दोय लाख मुनि नाथ, नग्न दिगम्बर गुरु थे।।
घोषार्या सुप्रधान, आर्यिकाओं की गणिनी।
त्रय लख अस्सी सहस, आर्यिकाएं गुणश्रमणी।।8।।

दोय लाख जिनभक्त, श्रावक अणुव्रती थे।
पाँच लाख सम्यक्त्व, सहित श्राविका तिष्ठे।।

जिन भक्ती वर तीर्थ, उसमें स्नान किया था।
भव अनंत के पाप, धो मन शुद्ध किया था।।9।।

चार शतक कर तुंग, चंद्र सदृश तनु सुंदर।
दोय लाख पूर्वायु, वर्ष आयु थी मनहर।।
चिन्ह मगर से नाथ, सब भविजन पहचाने।
नमूँ नमूँ नत माथ, गुरुओं के गुरु माने।।10।।

–दोहा –

ध्यानामृत पीकर भये, मृत्युंजय प्रभु आप।
धन्य घड़ी प्रभु भक्ति की, जजत मिटे भव ताप।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा –

प्रभु मैं याचूँ आज, जब तक मुक्ति नहीं मिले।
भव भव में सन्यास, सम्यग्ज्ञानमती सहित।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

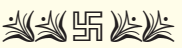

मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अजितयक्ष महाकालीयक्षीसहिताय
श्रीपुष्पदन्तनाथजिनेन्द्राय नमः।

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा

स्थापना-शंभु छंद

हे पुष्पदन्त भगवान् पुष्प तव, चरणों में जब चढ़ता है।
पूजन की विधि में सर्वप्रथम, स्थापन कर वह कहता है।।
हो गया जन्म सार्थक मेरा, प्रभुपद में जब स्थान मिला।
मैं धूल में गिरकर मिट जाता, लेकिन यह तो सौभाग्य खिला।।1।।

-दोहा-

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पुष्पदन्त की अर्चना, क्रमशः दे निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

-अष्टक-चामर छंद-

साधुचित्त के समान शुद्ध नीर ले लिया।
धार दे जिनेन्द्रपाद भव का तीर ले लिया।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य चन्दन की ही प्रतीक केशर मेरी।
पादपद्म में विलेपते सुगंधि है मिली।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुच्छ तंदुलों में मोतियों की कल्पना मेरी।
नाथ! पूर्ण होएगी जरूर साधना मेरी।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।3।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल हों या पीले चावलों में पुष्पभावना।
अर्चना के रूप में फलेगी मेरी भावना।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शांति का सदैव पूर हो।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर और पूरियों को थाल में भरा लिया।
भूख व्याधि शांति के लिए चरू चढ़ा दिया।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।5।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकों की ज्योति से प्रकाश फैलता सदा।
प्रभु की आरती से मन की ज्योति पाऊँ सर्वदा।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपघट में खेके पापकर्म नाश हों।
श्रीजिनेन्द्र की कृपा से पुण्य का विकास हो।।

पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्फलों से युक्त मोक्षफल की याचना करूँ।
द्राक्ष आम्र आदि अर्घ्य यह ही भावना करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।8।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादि द्रव्य ले करूँ जिनेन्द्र अर्चना।
तुम समान पद मिले, आश यह ही ''चन्दना''।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।9।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु तीन धार मैं करूँ।
जन्म औ जरा मरण त्रिरोग नाश मैं करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्री जिनेन्द्र के समीप पुष्प अंजली भरूँ।
पुष्प को बिखेर कर सुगंधि सर्वदिक् करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

शुक्र ग्रह शांति का अर्घ्य

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

नाथ की पूजन करते हैं-2,
अष्टद्रव्य, की थाली प्रभू के, चरणों में धरते हैं।।नाथ की.....।।टेक.।।

जब अशुभ कर्म के कारण, तन में व्याधी आती है।
धनहानि कलह आदिक से, मन में आंधी आती है।।
नाथ की पूजन करते हैं।।1।।

प्रभु पुष्पदंत तीर्थंकर, ग्रहशुक्र के स्वामी माने।
वे इस ग्रह की शान्ती में, ''चन्दना'' प्रमुख हैं माने।।
नाथ की पूजन करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

भगवान् तुम्हारी पूजन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।टेक.।।

जैसे अंगार दहकता है, जल सबकी प्यास बुझाता है।
सूरज जैसे देकर प्रकाश, धरती का तिमिर भगाता है।।
वैसे ही प्रभु मुख दर्शन से, मानों सब कुछ मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।1।।

दर्शन के भाव हुए जिस क्षण, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
चलकर जब पहुँच गए मंदिर, लक्षोपवास फल सहज हुआ।।
प्रभु सम्मुख आ गद्गद मन से, भव भव का अघ धुल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।2।।

भक्ती में शक्ति अचिन्त्य कही, यह भुक्ति मुक्ति सब कुछ देती।
जिनप्रतिमा भले अचेतन हैं, फिर भी चेतन को फल देतीं।।
पौराणिक कथन ''चन्दना यह, कलियुग में भी फलदाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।3।।

हो शुक्र अनिष्ट यदी प्रभुवर, दुख इष्ट वियोग सताता है।
यह शुभ हो जावे यदि जिनवर, सांसारिक सौख्य दिलाता है।।
प्रभु पुष्पदन्त भगवान् तेरी, भक्ती से सब मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

पुष्पदंत की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
करे शुक्रग्रह सान्त्वना, भरे स्वात्मसुख तोष।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

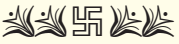

श्री पुष्पदंतनाथ जिन स्तोत्र

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

त्रैलोक्यपति देवेन्द्र नमित, साधूगण वंद्य सदा जिनवर।
सुख आत्माधीन अचल तव है, स्थान भ्रमण विरहित सुस्थिर।।
तव कीर्तिलता त्रिभुवन व्यापी, औ सिद्धि रमा तव चरणरता।
तव दिव्यसुधावच भव जलधि, से तिरने को उत्तम नौका।।1।।

काकंदी में सुग्रीव पिता, माता जयरामा जग पूजित।
फाल्गुनवदि नवमी के दिन प्रभु, गर्भावतरण मंगल मंडित।।
मगसिर शुक्ला प्रतिपद तिथि थी, जब जन्में थे भगवान यहाँ।
उन पुष्पदंत की दिव्यकथा, हरती है भवभय त्रास महा।।2।।

मगसिर सुदि एकम के प्रभु ने, जिनमुद्रा धर मोहारि हना।
कार्तिक सुदि दूज दिवस केवल-लक्ष्मी ने आन लिया शरणा।।
भादों सुदि अष्टमि के दिन प्रभु, सम्मेदाचल से सिद्ध हुए।
सुखस्वात्मसुधारस पान तृप्त, त्रिभुवन के अग्र विराज गये।।3।।

चउशतकर तुंग मकर लांछन, दो लाख वर्ष पूर्वायु कही।
शशिकांत देह भी पुष्पदंत! अंतक के अन्तक तुम्हीं सही।।
निश्चय व्यवहार रत्नत्रय से, भूषित शिवकांता वरण किया।
मुझ "ज्ञानमती" का भी रत्नत्रय, बस पूर्ण करो मैं शरण लिया।।4।।

नवग्रहशांति स्तोत्र

रचयित्री – आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छन्द –

सिद्धों का वंदन इस जग में, आतम सिद्धि का कारण है।
इनकी भक्ति से भक्त करें, दुर्गति का सहज निवारण है।।
सब तीर्थंकर भगवंत एक दिन, सिद्धि प्रिया को पाते हैं।
इसलिए सभी ग्रह की शांति में, वे निमित्त बन जाते हैं।।1।।

नभ में जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू व शुक्र, शनि ग्रह माने।
राहू केतू मिलकर नवग्रह, ज्योतिषी देव के ग्रह माने।।
मानव के जन्म समय से ये, सब जन्मकुण्डली में रहते।
शुभ-अशुभ आदि फल देने में, राशी अनुसार निमित बनते।।2।।

जब ग्रह अनिष्टकारी होवे, तब प्रभु भक्ती रक्षा करती।
जिनसागर सूरि ने बतलाया, नवग्रह में नव प्रभु की भक्ती।।
श्रीपद्मप्रभ भगवान सूर्य ग्रह, के अरिष्ट को शांत करें।
ग्रह सोम का जब होवे प्रकोप, तब भक्त चन्द्रप्रभु याद करें।।3।।

निज मंगल ग्रह की शांति हेतु, प्रभु वासुपूज्य को नमन करो।
बुधग्रह जब देवे कष्ट तुरत, प्रभु मल्लिनाथ अर्चन कर लो।।
महावीर प्रभू गुरु ग्रह से होने, वाले कष्ट मिटाते हैं।
निज गुरुबल तेजस्वी करने हित, वर्धमान को ध्याते हैं।।4।।

श्री पुष्पदंत भगवान शुक्र ग्रह, के शांतिकारक माने।
शनिग्रह अति उग्र हुआ तो भी, मुनिसुव्रत प्रभु उसको हानें।।
ग्रह राहु अगर होवे अरिष्ट, तो नेमिनाथ का मंत्र जपो।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, ग्रह केतु शांति हेतू प्रणमो।।5।।

ये नव तीर्थंकर नवग्रह की, शांति में हेतू माने हैं।
है दुख का मूल असाता ही, पर बाह्य निमित ग्रह माने हैं।।

जिन भक्ति असाता कर्मों को, साता में परिवर्तित करती।
ग्रह से उत्पन्न सभी बाधा, तब ही तो शांत हुआ करती।।6।।

पूजन-अर्चन के साथ-साथ, ग्रहशांति मंत्र का जाप करो।
जितनी संख्या जिस मंत्र की है, उसको कर मन संताप हरो।।
अपने प्रभु के अतिरिक्त कहीं, मिथ्यामत में मत भरमाना।
दुख संकट आने पर भी कभी, जिनधर्म को भूल नहीं जाना।।7।।

नवग्रहशांति की पूजन कर, नवग्रह का कभी विधान करो।
तीर्थंकर प्रभु के गुण गाकर, निज आतम गुण भंडार भरो।।
निज जन्मकुण्डली में स्थित, ग्रह को भी उच्चस्थान करो।
फिर सूर्य-चन्द्र सम शुभ प्रकाश से, जीवन का उत्थान करो।।8।।

बीसवीं सदी की प्रथम बालसति, गणिनी माता ज्ञानमती।
उनकी शिष्या ''आर्यिका चन्दनामति'' ने यह स्तुती रची।।
पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, तिथि फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
निजशांति हेतु ग्रहशांति हेतु, प्रभु पद में अर्पित काव्यकृती।।9।।

तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना

(मंगलचतुर्विंशतिका)

—गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

-अनुष्टुप् छंद-

अयोध्या मंगलं कुर्या-दनन्ततीर्थकर्तृणाम्।
शाश्वती जन्मभूमिर्या, प्रसिद्धा साधुभिर्नुता।।1।।

ऋषभोऽजिततीर्थेशोऽप्यभिनंदनतीर्थकृत्।
श्रीमान् सुमतिनाथश्चा - नन्तनाथजिनेश्वरः।।2।।

पंचतीर्थकृतां गर्भ - जन्मकल्याणकादिषु।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या वंद्यते वंदयिष्यते।।3।।

संप्रति कालदोषेण शेषास्तीर्थंकराः पृथक्।
संजातास्ता अपिजन्म-भूमयो मंगलं भुवि।।4।।

श्रावस्ती मंगलं कुर्यात्, संभवनाथजन्मभूः।
तनुतान्मे मनःशुद्धिं, भव्यानां भवहारिणी।।5।।

कौशाम्बी मंगलं कुर्यात्, पद्मप्रभस्य जन्मभूः।
जिनसूर्यो मनोऽब्जं मे, प्रफुल्लीकुरुतादपि।।6।।

वाराणसी जगन्मान्या, मंगलं तनुतान्मम।
जन्मभूमिः सुरैः पूज्या, सुपार्श्वपार्श्वनाथयोः।।7।।

चन्द्रपुरी सुरैर्मान्या, मंगलं कुरुतात्सदा।
चन्द्रप्रभजिनेंद्रस्य, जन्मभूर्जन्मपावनी।।8।।

काकंदी मंगलं कुर्यात्, पुष्पदन्तस्य जन्मभूः।
आनंदं तनुताद् भूमौ, सर्वमंगलकारिणी।।9।।

मंगलं कुरुतान्नित्यं, जन्मभूर्भद्रकावती।
शीतलस्य जिनेंद्रस्य, मनो मे शीतलं क्रियात्।।10।।

सिंहपुरी जगन्मान्या, मंगलं कुरुतान्मम।
श्रीश्रेयांसजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिः शिवंकरा।।11।।

चंपापुरी जगद्वंद्या, मंगलं तनुताद् ध्रुवं।
वासुपूज्यजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिर्नुतामरैः।।12।।

सा कंपिलापुरी नित्यं, मंगलं कुरुतान्मम।
मच्चित्तं विमलीकुर्यात्, विमलेश्वरजन्मभूः।।13।।

रत्नपुरी यतीन्द्राणां, मंगलं कुरुताच्च नः।
सद्धर्मवृद्धये भूयाद्, धर्मनाथस्य जन्मभूः।।14।।

हस्तिनागपुरी नित्यं, मंगलं तनुतान्मम।
शांतिकुंथ्वरतीर्थेशां, जन्मभूमिर्जगन्नुता।।15।।

या मिथिलापुरी शश्वत्, मंगलं कुरुतान्मम।
जन्मभूमिः प्रसिद्धाभूत्, मल्लिनाथनमीशयोः।।16।।

मंगलं संततं कुर्यात्, राजगृही सुजन्मभूः।
मुनिसुव्रतनाथस्य, दद्यान्मे सुव्रतं त्वसौ।।17।।

शौरीपुर्यर्द्धचक्र्याद्यैः, मान्या मे मंगलं क्रियात्।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, नेमिनाथस्य जन्मभूः।।18।।

या कुण्डलपुरी पूज्या, मंगलं कुरुताद् भुवि।
जन्मभूमिः प्रसिद्धास्ति, महावीरस्य संप्रति।।19।।

राजधानीह सिद्धार्थ-भूपतेः साधुभिर्नुता।
नंद्यावर्तं च प्रासादं, रत्नवृष्ट्या सुमंगलम्।।20।।

चतुर्विंशतितीर्थेशां, षोडश जन्मभूमयः।
वंद्यास्ता मंगलं कुर्युः, घ्नन्तु जन्मपरम्परां।।21।।

दीक्षाज्ञानस्थलं पूज्यं, प्रयागश्चाहिच्छत्रकं।
संततं मंगलं कुर्यात्, पूर्णज्ञानर्द्धये भवेत् ।।22।।

कैलाशचंपापावोर्ज-यन्तसम्मेदशृंगिषु।
निर्वाणभूमयो यास्ताः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

पंचकल्याणकैः पूज्या, भूमिसरोवराद्रयः।
तास्तान् ज्ञानमती याचे, दद्युः सिद्धिं च मे ध्रुवम्।।24।।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

– शेर छन्द–

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
भद्दिलपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मभूमि है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।

यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

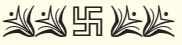

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री ऋषभदेव भगवान
	–श्री अजितनाथ भगवान
	–श्री अभिनंदननाथ भगवान
	–श्री सुमतिनाथ भगवान
	–श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	–श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	–श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	–श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	–श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	–श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	–श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी	–श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	–श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	–श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	–श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	–श्री शांतिनाथ भगवान
	–श्री कुन्थुनाथ भगवान
	–श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	–श्री मल्लिनाथ भगवान
	–श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	–श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	–श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	–श्री महावीर भगवान

–निवेदक –

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

प्रधान कार्यालय –**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**, फोन नं.-01233-280184, 292943

काकन्दी तीर्थ की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-मिलो न तुम तो.....

पुष्पदंत जिन जन्मभूमि, काकन्दी तीरथ प्यारा, उतारें आरती-2।।
सुर नर वंदित तीर्थ हमारा, काकन्दी जी न्यारा, उतारें आरती।।टेक.।।

चौबीस तीर्थंकर में, पुष्पदंत स्वामी, नवमें जिनवर हैं।।हो.....
काकन्दी नगरी तब से, पावन बनी सुर नर वंदित है।।हो....
इन्द्र, मनुज भी जिस नगरी को, शत शत शीश झुकाएँ, उतारें आरती।।1।।

जयरामा माता और सुग्रीव पितु का शासन था जहाँ। हो.....
जन्में तो उस क्षण पूरा, स्वर्ग ही उतरकर आया था वहाँ।।हो....
चार-चार कल्याणक से पावन नगरी को ध्याएँ, उतारें आरती।।2।।

बीते करोड़ों वर्षों, फिर भी धरा वह पूजी जाती है। हो.....
धूल भी पवित्र उसकी, मस्तक को पावन बनाती है।। हो.....
जैनी संस्कृति की दिग्दर्शक, उस भूमी को ध्यावें, उतारें आरती।।3।।

रोमांच होता है जब, उस क्षण की बातें मन में सोच लो। हो.....
वन्दन करो उस भू को, निज मन में इच्छा इक ही तुम धरो।। हो.....
कब प्रभु जैसा पद हम पाएं, यही भावना भाएँ, उतारें आरती।।4।।

जो भव्य प्राणी ऐसी, पावन धरा को वंदन करते हैं। हो.....
क्रम-क्रम से पावें शक्ती, मानव जनम भी सार्थक करते हैं।। हो.....
आरति कर सब भव्य जीव, भव आरत से छुट जाएं, उतारें आरती।।5।।

प्राचीन इस तीरथ को विकसित किया है सबने मिल करके। हो.....
गणिनीप्रमुख श्री माता, ज्ञानमती जी से शिक्षा ले करके।। हो.....
तभी ''चन्दनामती'' तीर्थ ने, नव स्वरूप है पाया, उतारें आरती।।6।।

पुष्पदन्तनाथ भगवान की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय पुष्पदन्त स्वामी, प्रभु जय पुष्पदन्त स्वामी।
काकन्दी में जन्मे, त्रिभुवन में नामी।।ॐ जय.।।

फाल्गुन कृष्णा नवमी, गर्भ कल्याण हुआ। स्वामी....
जयरामा सुग्रीव मात-पितु, हर्ष महान हुआ।।ॐ जय.।।1।।

मगशिर शुक्ला एकम, जन्म कल्याणक है। स्वामी.....
तप कल्याणक से भी, यह तिथि पावन है।। ॐ जय.।।2।।

कार्तिक शुक्ला दुतिया, घातिकर्म नाशा। स्वामी.....
पुष्पकवन में केवल-ज्ञानसूर्य भासा।।ॐ जय.।।3।।

भादों शुक्ला अष्टमि, सम्मेदाचल से। स्वामी....
सकल कर्म विरहित हो, सिद्धालय पहुँचे।।ॐ जय.।।4।।

हम सब घृतदीपक ले, आरति को आए। स्वामी....
यही "चन्दनामती" कहे, भव आरत नश जाए।।ॐ जय.।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –कान्ची हो कान्ची रे.....

आओ रे आओ रे सब मिल के आओ, प्रभु जी का उत्सव मनाओ रे।
हो.....
गाओ रे गाओ रे सब मिलके गाओ, पुष्पदंतनाथ गुण गाओ रे।।
हो.....।।टेक.।।

नवमें तीर्थेश जो जगत् ईश हैं, पुष्पदंत प्रभु का मस्तकाभिषेक है।
स्वर्ण कलश हाथ में, लेके सबको साथ में,
जिनवर पे कलशा ढुराओ रे.....हो....ओ.....।।आओ रे.।।1।।

नीर क्षीर धार कैसी मनोहारी है, इनसे प्रभु की छवि लगती प्यारी-प्यारी है।
देखो वीतराग छवी, इनकी करो भक्ति सभी,
जय जय से नभ को गुंजाओ रे.....हो....ओ....।।आओ रे.।।2।।

केशर से केशरियानाथ बन गये, ''चंदनामती'' ये तीर्थनाथ बन गये।
होली खेलो संग में, प्रभु के भक्ति रंग में,
रंग गुलाल उड़ाओ रे.....हो.....ओ.....।।आओ रे.।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –अरे रे मेरी .....

करो रे अभिषेक प्रभू का, पुष्पदंतेश प्रभू का,
जयरामा माता के लाल का।।करो रे.।।
काकंदी जी तीर्थ में प्रभू विराजमान,
यही नगरी है इनका जनमस्थान।
पुष्पदंत प्रभु को है मेरा प्रणाम,
इनका नाम जपने से बनते हैं काम।।करो रे.।।टेक.।।
नवमें तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ हैं,
शुक्रग्रह शांतिकारक प्रभु आप हैं।
काकंदी में देखो कैसा आनन्द हो रहा,
प्रभु जी के दर्श करके हर्ष हो रहा।।करो रे.।।1।।
राजधानी दिल्ली से उपहार मिला है,
काकंदी में देखो नया मंदिर बना है।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली,
भक्तों के हृदय में ज्योति ज्ञान की जली।।करो रे.।।2।।
सभी भक्त स्वस्थ व चिरायु बनेंगे,
अपनी मनोकामनाएं पूरी करेंगे।
रोग शोक अपने सभी नष्ट करेंगे,
''चंदनामती'' वे सुख भण्डार भरेंगे।।करो रे.।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –जय जय माँ.....

क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।
श्री पुष्पदंत प्रभु का, मस्तकाभिषेक करो।।टेक.।।

काकंदी नगरी में, यह मंगल अवसर है।
जहाँ नूतन मंदिर में, नवमें तीर्थंकर हैं।।
उन तीर्थंकर पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।1।।

गणिनी माँ ज्ञानमती, की सम्प्रेरणा मिली।
प्रभु जन्मभूमि में तब, पावन नवज्योति जली।।
उस तीरथ के पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।2।।

प्रभु दर्श करें जो भी, वे स्वस्थ चिरायु रहें।
प्रभु प्रतिमा जग भर को, सुख शांति प्रदान करे।।
सुखकारी प्रभु पद में, वन्दन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।3।।

ग्रह शुक्र शांतिकारक, हैं पुष्पदंत स्वामी।
"चंदनामती" इनकी, भक्ती है कल्याणी।।
ग्रह शांति हेतु प्रभु को, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।4।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –माई रे माई.....

पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में, गूँज उठी शहनाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।टेक.।।

काकंदी वह पुण्यभूमि है, पुष्पदंत जहाँ जनमे।
जयरामा सुग्रीव मात-पितु हर्षे थे निज मन में।।
इन्द्रों की टोली स्वर्गों से, काकंदी में आई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियाँ की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
जीर्णोद्धार विकास तीर्थ का, करो कराओ भक्तों।।
इसी भावना के कारण, उत्सव की घड़ियाँ आईं।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।2।।

पुष्पदंत प्रभु शुक्र-अरिष्ट, निवारक माने जाते।
भौतिक सम्पति पाने हेतू, भक्त शरण में आते।।
इसीलिए ''चंदनामती'', उन प्रभु की महिमा गाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–पंखिड़ा.....

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में।
कहना इन्द्र से कि चलो मध्यलोक में।।पंखिड़ा.....।।टेक.।।

मध्यलोक में श्री जिनवरों के नाथ जन्मे हैं।
उनके माता-पिता और तीनों लोक हरषें हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।1।।

देखो मध्यलोक में ही सारे तीर्थक्षेत्र हैं।
प्रभु के मोक्ष से पवित्र यहीं सिद्धक्षेत्र हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।2।।

मध्यलोक में सदा ही साधु-सन्त रहते हैं।
विश्वशांति का सदा ही वे प्रयत्न करते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।3।।

स्वर्गपुरि से देव-इन्द्र मध्यलोक आते हैं।
"चंदनामती" वे जिनवरों के गीत गाते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।4।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–सबसे बड़ी मूर्ति का.....

पुष्पदंतनाथ का, नवम तीर्थनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।टेक.।।

तीर्थ बनी काकन्दी नगरी।
पुष्पदन्त प्रभु की जन्म नगरी।।
उनकी हैं विराजमान प्रतिमा।
आज तीर्थ की यही है महिमा।।

उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।1।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती जी हैं।
जैन संस्कृति की ये निधी हैं।।
उनकी प्रेरणा से बनी प्रतिमा।
तीर्थ की बढ़ी है इससे गरिमा।।

उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।2।।

जन्मकल्याणक है उन्हीं प्रा का।
महोत्सव मना लो उन्हीं प्रभु का।।
''चन्दनामती'' जनम सफल हो।
मिले शीघ्र मुझको मुक्ति फल हो।।

उन्हीं तीर्थनाथ का, पुष्पदंतनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जय जयकार हो रहा है।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–दमादम मस्त कलन्दर.....

कलश हाथों में लेकर, करूँ अभिषेक प्रभू पर,
तीर्थंकर प्रभु करना कृपा अब मुझ पर, हे प्रभु मुझ पर-2
जयति जय जिनवर जिनवर-2।।टेक.।।

जयरामा सुग्रीव के नन्दन, तीर्थंकर जिन सूर्य को वन्दन।
जन्म लिया तो सुरगण आये हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।1।।

काकन्दी नगरी के राजा, दीक्षा ले तुम बने मुनिराजा।
फिर मुनिचर्या बतलाई हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।2।।

पुष्पदन्त प्रभु नाम तुम्हारा, त्यागा तुमने वैभव सारा।।
तप कर केवलज्ञान हो पाया हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।3।।

सम्मेदगिरि से शिवपद पाया, घाति-अघाती कर्म जलाया।
सिद्धशिला को प्राप्त किया हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा प्रभु उत्सव की।
'चन्दनामती' तभी खुशियाँ छाईं हे जिनवर, नवम जिनेश्वर-2।।
कलश.....।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....

तीर्थ को वन्दन कर लो रे-2,
तीर्थंकर श्री पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि नम लो।।टेक.।।

इस भारत वसुन्धरा पर, तीर्थंकर सदा जनमते।
वे पंचकल्याणक पाकर, जग का कल्याण हैं करते।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।1।।

श्री पुष्पदन्त तीर्थंकर, काकन्दी में जन्मे थे।
सुग्रीव पिता जयरामा, माता दोनों हरषे थे।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।2।।

बस इसीलिए काकन्दी, को तीर्थ कहा जाता है।
''चन्दनामती'' इससे ही, भवसिन्धु तिरा जाता है।।
तीर्थ को वन्दन कर लो रे।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।

शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।

तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।

पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।3।।

भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में भव्यतापूर्वक पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न

-जीवन प्रकाश जैन, प्रबंध सम्पादक

नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (जिला-देवरिया) उ.प्र. में तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिनाँक 17 जून से 21 जून 2010 तक नूतन जिनमंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भारी हर्षोल्लास के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि काकंदी तीर्थक्षेत्र का विकास विशाल जिनमंदिर निर्माण के साथ किया गया है। यहाँ पर नवनिर्मित मंदिर जी में 9 फुट उत्तुंग ग्रेनाइट पाषाण वाली भगवान पुष्पदंतनाथ की पद्मासन प्रतिमा विराजमान की गई हैं। तीर्थ पर नूतन कीर्तिस्तंभ का निर्माण तथा एक प्राचीन जिनमंदिर भी स्थित है। इस तीर्थ पर मंदिर एवं मूर्ति निर्माण का पुण्य श्री राजकुमार जैन-श्रीमती आशा जैन 'वीरा बिल्डर्स' परिवार, दिल्ली को प्राप्त हुआ तथा नूतन कीर्तिस्तंभ के निर्माण का सौभाग्य संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-श्रीमती कुसुमलता जैन-दिल्ली को प्राप्त हुआ।

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के क्रम में पूज्य माताजी की प्रेरणा से काकंदी तीर्थ पर पूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनाँक 17 जून से झण्डारोहण, मंगल कलश स्थापना, दीप प्रज्ज्वलन व मण्डल पर भगवान विराजमान होकर गर्भकल्याणक के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ हुआ। पुनः 18 जून को जन्मकल्याणक महोत्सव, 19 जून को दीक्षाकल्याणक, 20 जून को भगवान का आहार एवं केवलज्ञानकल्याणक व 21 जून को मोक्षकल्याणक, शिखर पर कलशारोहण, अखण्ड ध्वज स्थापन, भगवान का महामस्तकाभिषेक, विश्वशांति महायज्ञ, पूजा अन्त्य विधि आदि के साथ यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप, पं. सतेन्द्र कुमार जैन-तिवरी (म.प्र.) ने मुख्य भूमिका निभाई। समस्त महोत्सव भगवान पुष्पदंतनाथ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन के कुशल

नेतृत्व से महोत्सव को भारी सफलता प्राप्त हुई और 21 जून को भगवान पुष्पदंतनाथ के महामस्तकाभिषेक का सीधा प्रसारण आस्था चैनल के माध्यम से प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक तथा मध्यान्ह 1 बजे से 3 बजे से दुनिया के लगभग 150 देशों में किया गया। इस सीधे प्रसारण से जहाँ जैनधर्म की महती प्रभावना हुई, वहीं जन्मभूमि काकंदी तीर्थक्षेत्र का भी नाम देश-विदेश में गुंजायमान हुआ और तीर्थ की प्रभावना हुई।

विशेषरूप से महोत्सव के मध्य दिनाँक 20 जून को रात्रि 8 बजे प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख पात्र-माता-पिता श्री पुखराज-अनूप बाई पाण्ड्या, सौधर्म इन्द्र श्री महावीर-विमला जैन, धनकुबेर श्री पुष्पदंत जैन, ईशान इन्द्र श्री पुष्कर-इन्दू जैन, सानत्कुमार इन्द्र श्री शलभ-श्वेता जैन, माहेन्द्र इन्द्र श्री ज्ञानेन्द्र-संध्या जैन व समस्त इन्द्र-इन्द्राणीगण तथा प्रमुख श्रेष्ठियों में श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली, श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति-दिल्ली, श्री कमलचंद जैन, खारबावली-दिल्ली, श्री ज्ञानचंद जैन, आरा (बिहार) तथा श्री अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली का समिति की ओर से सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सभी को तिलक, माल्यार्पण के साथ प्रशस्ति पत्र, शॉल, श्रीफल आदि भेंट किये गये। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में देवरिया के जिलाधिकारी माननीय श्री पवन कुमार जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में एस.एस.पी. माननीय श्री एम.डी. कर्णधार पधारे। समिति द्वारा अतिथियों को भी सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पुण्य अर्जित किया। जैन श्रद्धालुओं के साथ ग्रामवासी श्रद्धालुओं ने भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आदि का भरपूर आनंद उठाया। महोत्सव में उमरगा (महा.) के राजेन्द्र जैन ग्रुप के कलाकारों द्वारा प्रतिदिन विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा संगीतकार के रूप में हरीश कुमार एण्ड पार्टी-भरतपुर (राज.) द्वारा पूजा-विधान आदि में अपनी स्वर लहरियों से सभी भक्तों का मन मोहा। व्यवस्थाओं की दृष्टि से समिति द्वारा समस्त यात्रियों के आवास हेतु विशेष 75 अस्थाई डीलक्स फ्लैट्स का निर्माण कराया गया।

सभी तीर्थयात्रियों को आवास संयोजक के रूप में श्री शुभचंद्र जैन-टिकैतनगर ने अपनी टीम के साथ उचित सुविधाएँ प्रदान करने का कुशल प्रयास किया। श्री सपन जैन-इलाहाबाद एवं उनके सहयोगियों ने महामस्तकाभिषेक में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही श्री अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली, ब्र. राजेश जैन-जम्बूद्वीप, श्री अम्यु कुमार जैन-मेरठ, श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना

आदि महानुभावों ने भी विभिन्न व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करके महोत्सव को सफल बनाया। महोत्सव की सफलता में गोरखपुर दिगम्बर जैन समाज के समस्त वरिष्ठ पदाधिकारियों-अध्यक्ष श्री पुष्पदंत जैन, मंत्री-श्री पुष्कर जैन, उपाध्यक्ष-श्री पुखराज पाण्ड्या, उपाध्यक्ष-श्री ज्ञानेन्द्र जैन, प्रचार मंत्री-डॉ. अभय जैन, श्री महावीर जैन, श्री प्रदीप जैन (एस.बी.आई वाले) तथा अभिनंदन जैन, रिशू जैन, दिनेश जैन, गौरव जैन आदि कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण महोत्सव में पधारे समस्त अतिथियों एवं यात्रियों के प्रीतिभोज की व्यवस्था सेठी फ्लोर मिल प्राइवेट लिमिटेड, चरगांवा-गोरखपुर (उ.प्र.) द्वारा की गई।